

ट्रम्प की चाहत

अमेरिकी राष्ट्रपति दुनिया को कैसे चलाना चाहते हैं, उनकी टैरिफ़ को लेकर देशों को दी जा रही धमकियों से ही पता लग जाता है। उनकी आक्रामकता देखिए कि अभी भारत व अमेरिका के अधिकारियों के बीच ड्रेड व्यापार समझौते को लेकर बातचीत चल ही रही है, इस बीच उनका एक बड़ा दंभूपूर्वक बयान भी आ गया।

ट्रम्प ने कहा कि अमेरिकी उत्पादों की जल्द भारत के बाजारों में पहुंच होने वाली है। उन्होंने यह दावा भी किया कि यह ड्रेड इंडोनेशिया का फूर्ते वाली होगी। अमेरिकी उत्पादों पर भारत में जीरो टैरिफ़ का लागता है। दो दिन पहले ही अमेरिका ने इंडोनेशिया से इस तरह की डील की है, जिसमें इंडोनेशिया पर 19 फीसद टैरिफ़ लगाया गया है। अब एक अगस्त से इंडोनेशिया से अमेरिका जाने वाले सामानों पर 19 फीसद टैरिफ़ चुकाना होगा। वहीं अमेरिकी सामानों पर इंडोनेशिया में कोई टैरिफ़ नहीं देना होगा। ट्रम्प ने अपने ही अंदराज में यह भी कहा कि हमने कई बहराहीन देशों से समझौते किए हैं हमारा एक और समझौता होने वाला है शायद भारत के साथ। उनका घमंडोपन यहाँ नहीं थमता, वह बातचीत के बीच में यह भी बोल गए हैं कि मझे नहीं पता कि हम बातचीत कर रहे हैं। जब मैं लेटर भेजूंगा तो वह समझेगा हो जाएगा।

इस तरह की भाषा वह तब बाल रहे हैं जब भारतीय वाणिज्य मंत्रालय की एक टीम अमेरिका पहुंची हुई है। जहां वह ड्रेड व्यापार के लेकर बातचीत करेंगे। बताया जा रहा है कि बातचीत सोमवार से शुरू भी हो गई और इसके गुरुवार तक चलने का उम्मीद है। ऐसे में इस तरह के बतानों का क्या मतलब है। जहां तक बात भारत की है, भारतीय अधिकारी चाहते हैं कि लेइ टैरिफ़ रेट 100% की एसीसी से कम हो और इसके बदले में अमेरिका टैरिफ़ रेट 10% के लिए भारत में रियायत चाहता है, लेकिन भारत स्पष्ट कहता रहा है कि वह अपने कृषि और डिरी क्षेत्रों के विदेशी कंपनियों के लिए नहीं खोलेगा। हां भारत जरूर गैर कृषि क्षेत्रों में समझौता करने को चैरूर है। अब यह तो तभी पता चलेगा जब किसी तरह का कोई समझौता सामने आता, लेकिन ट्रम्प का व्यवहार यही बता रहा है कि उन्हें किसी समझौते की परवाह नहीं है और वह अपनी तरफ़ पर ही समझौता करना चाहते हैं। यह किसी भी संप्रभु राष्ट्र के लिए कोई समानजनक तक नहीं हो सकती।

हालांकि भारत की तरफ़ से अभी कोई प्रतिक्रिया समने नहीं आई और यह टीकी ही है, क्योंकि जब तक दोनों देशों के बीच चल रही ड्रेड व्यापार किसी नलीज पर नहीं पहुंचती तब तक किसी प्रतिक्रिया का कोई मतलब नहीं है, लेकिन डोनाल्ड ट्रम्प को इससे फर्क नहीं पड़ता कि बातचीत चल रही है या नहीं। गुरुवार को एक तरह से उन्होंने अपना फरमान सुना दिया। डोनाल्ड ट्रम्प पहले भी कह चुके हैं कि जो देश रूस के साथ व्यापार करेंगे, उससे तेल व गैस लेंगे वे उसके कोपाइजन का शिकाया होंगे और बदले में उन पर 100% प्रतिशत टैरिफ़ लगाया जा सकता है। लगता है कि ट्रम्प को इस बात की भी कोई परवाह नहीं है कि दुनिया उनके विषय में बात सोच रही है। यह दुखद है कि ट्रम्प व्यापार को युद्ध के रूप में ले रहे हैं।

ईश्वरीय भवित के बाद आती है स्वच्छता

बतावरण को स्वच्छ रखने की परंपरा हमारी जीवनशैली का अधिन अंग है व सांस्कृतिक चेतना प्राचीन काल से ही स्वच्छता पर बल देती रही है, हमारी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना प्राचीन काल से ही स्वच्छता पर बल देती है। अपने घरों, पूजा स्थलों और आपास के बतावरण को स्वच्छ रखने की परंपरा हमारी जीवनशैली का अधिन अंग है, हां प्राचीन महात्मा गांधी कहते थे, स्वच्छता ईश्वरीय भवित के बाद आती है, वे स्वच्छता को धर्म, अध्यात्म और नागरिक जीवन की आधारशिला मानते थे, न्यूनतम संसाधनों का उपयोग करके अपव्यय को न्यूनतम करना और उन्हें अन्य उद्देश्य के लिए पुनः उपयोग करना, हमारी से हमारी जीवनशैली का हिस्सा रहा है।



-प्रोफेसर मुमुक्षु, राष्ट्रपति



नस्लवाद को हराने वाला मानवता का योद्धा

नेल्सन मंडेला

नेल्सन मंडेला की शिक्षा की शुरआत क्लार्कबरी मिसनरी स्कूल से हुई। उन्होंने फॉर्ट हैवर यूनिवर्सिटी और जोहान्सबर्ग स्थित विटावाटर स्नैड विश्वविद्यालय में दाखिला लिया, जहां उन्होंने कानून की पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने रंगभेद नीति और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया जिया गया। यह क्षण इतिहास में आज भी जीवंत है, जब एक अव्यवेत रंगभेद नीति और व्यवहार द्वारा वार्ता और दिया गया था, अब स्वतंत्रता और न्याय का प्रतीक बन चुका था। रिहाई की मांग उठने लगी। अंततः सरकार ज्ञानी और 11 फरवरी 1990 को नेल्सन मंडेला को जैसे से दिया जिया गया।

असमानताओं के विरुद्ध आवाज उठाने शुरू कर दी थी। दक्षिण अफ्रीका में उस समय एलप्रांस्टेल कराक द्वारा अपराधिक व्यापार के बाल गए।

नेल्सन मंडेला ने इस महान नेता को ब्रुनियारी अधिकारों से विचित रखा गया था। उन्हें बोट देने, जमीन रखने, शिक्षा प्राप्त करने, अस्पताल में इलाज कराने और बसों-रेस्टरों के बाल गए। अहिंसा के पथ पर अडिंग रहने के प्रेरणा ने दक्षिण अफ्रीका को नस्लीय संघर्ष से निकालकर लोकतंत्र की ओर अग्रसरित किया। दक्षिण अफ्रीकी राजनीति ही, जिसमें दूरवास्तु और नागरिक सम्मान प्रदान किया गया। 1994 में वहाँ बाल वार बहुजातीय अमीर चुनाव आयोजित हुए, जिसमें हर नागरिक को मतवान का अधिकार मिल और परिणामस्वरूप नेल्सन मंडेला देश के पहले अव्यवेत राष्ट्रपति बने। यह महज एक राजनीतिक जैत नहीं थी, यह एक युग परिवर्तन था। मंडेला ने अपने राष्ट्रपति के बाल में सुलग, सामाजिक समरता और आर्थिक पुनर्नियन की नीति को अपनाया। उन्होंने नेतृत्व के बाल गए, लोकतंत्र के बाल गए। उन्होंने लगाकर जब उन्हें उम्मीदों के सिंजव नामक एक सशस्त्र संगठन की स्थापना की, जो दक्षिण अफ्रीका में गोलियां लेने की ओर आरंभ थी।

मंडेला ने इसी अन्यायपूर्ण नीतियों के बिलाफ संघर्ष का बिगुल बजाया। वे 1944 में अपेक्षन नेशनल कांग्रेस से जुड़ गए और जल्द ही अप्रैल क्षेत्र कर सकता है। नेल्सन मंडेला का जन्म 18 जुलाई 1918 को दक्षिण अफ्रीकी को म्वेजो नामक गांव में हुआ था। वे थेम्बु कुल की एक शाया मिदिया जनजाति से थे और उनका मूल नाम रोहिंगा था। जिसका नामरातीय उन्हें नेल्सन नाम उनके स्कूल के विद्यालय के नाम से बदला गया। अंग्रेजी नामों की परंपरा के तहत दिया था। उनका जीवन एक सामाजिक अफ्रीकी बच्चे की तरह शुरू हुआ तोके भीतर असाधारण नेतृत्व क्षमता और अजायब के प्रति गहरी संवेदना थी, जिसने उन्हें बाल में एक क्रांतिकारी नेता बना दिया।

1962 में मंडेला को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर देशद्रोह, हिंसा भड़काने और विदेशी सहायता करने के आरोप लगाए गए। उन्होंने उम्मीदों के सिंजव नामक एक सशस्त्र संगठन की स्थापना की, जो दक्षिण अफ्रीका में गोलियां लेने की ओर आरंभ थी।

मंडेला ने इसी अन्यायपूर्ण नीतियों के बिलाफ संघर्ष का बिगुल बजाया। वे 1944 में अपेक्षन नेशनल कांग्रेस से जुड़ गए और जल्द ही अप्रैल क्षेत्र कर सकता है। नेल्सन मंडेला का जन्म 18 जुलाई 1918 को दक्षिण अफ्रीकी को म्वेजो नामक गांव में हुआ था। वे थेम्बु कुल की एक शाया मिदिया जनजाति से थे और उनका मूल नाम रोहिंगा था। जिसका नामरातीय उन्हें नेल्सन नाम उनके स्कूल के विद्यालय के नाम से बदला गया। अंग्रेजी नामों की परंपरा के तहत दिया था। उनका जीवन एक सामाजिक अफ्रीकी बच्चे की तरह शुरू हुआ तोके भीतर असाधारण नेतृत्व क्षमता और अजायब के प्रति गहरी संवेदना थी, जिसने उन्हें बाल में एक क्रांतिकारी नेता बना दिया।

1962 में मंडेला को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर देशद्रोह, हिंसा भड़काने और विदेशी सहायता करने के आरोप लगाए गए। उन्होंने उम्मीदों के सिंजव नामक एक सशस्त्र संगठन की स्थापना की, जो दक्षिण अफ्रीका में गोलियां लेने की ओर आरंभ थी।

मंडेला ने इसी अन्यायपूर्ण नीतियों के बिलाफ संघर्ष का बिगुल बजाया। वे 1944 में अपेक्षन नेशनल कांग्रेस से जुड़ गए और जल्द ही अप्रैल क्षेत्र कर सकता है। नेल्सन मंडेला का जन्म 18 जुलाई 1918 को दक्षिण अफ्रीकी को म्वेजो नामक गांव में हुआ था। वे थेम्बु कुल की एक शाया मिदिया जनजाति से थे और उनका मूल नाम रोहिंगा था। जिसका नामरातीय उन्हें नेल्सन नाम उनके स्कूल के विद्यालय के नाम से बदला गया। अंग्रेजी नामों की परंपरा के तहत दिया था। उनका जीवन एक सामाजिक अफ्रीकी बच्चे की तरह शुरू हुआ तोके भीतर असाधारण नेतृत्व क्षमता और अजायब के प्रति गहरी संवेदना की ओर आरंभ थी।

मंडेला ने इसी अन्यायपूर्ण नीतियों के बिलाफ संघर्ष का बिगुल बजाया। वे 1944 में अपेक्षन नेशनल कांग्रेस से जुड़ गए और जल्द ही अप्रैल क्षेत्र कर सकता है। नेल्सन मंडेला का जन्म 18 जुलाई 1918 को दक्षिण अफ्रीकी को म्वेजो नामक गांव में हुआ था। वे थेम्बु कुल की एक शाया मिदिया जनजाति से थे और उनका मूल नाम रोहिंगा था। जिसका नामरातीय उन्हें नेल्सन नाम उनके स्कूल के विद्यालय के नाम से बदला गया। अंग्रेजी नामों की परंपरा के तहत दिया था। उनका जीवन एक सामाजिक अफ्रीकी बच्चे की तरह शुरू हुआ तोके भीतर असाधारण नेतृत्व क्षमत

